कथा सरिता

विश्वास

एक अमीर आदमी था। उसने समुद्र में अकेले घूमने के लिए एक नाव बनवाई। छुट्टी के दिन वह नाव लेकर समुद्र की सैर करने निकला। समुद्र के मध्य पहुंचा ही था कि अचानक एक ज़ोरदार तूफान आया। उसकी नाव पूरी तरह तहस-नहस हो गई लेकिन वह लाइफ जैकेट की मदद से समुद्र में कूद गया। तैरता हुआ वह एक टापू पर पहुंचा, लेकिन वहां भी कोई नहीं था। टापू के चारो ओर समुद्र के अलावा कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। उस आदमी ने सोचा कि जब मैंने पूरी ज़िंदगी में किसी का कभी भी बुरा नहीं किया तो मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ..? उस आदमी को लगा कि भगवान ने मौत से बचाया तो आगे का रास्ता भी भगवान ही बतायेगा। धीरे-धीरे वह वहाँ पर उगे झाड़-पत्ते खाकर दिन बिताने लगा। अब धीरे-धीरे उसकी श्रद्धा टूटने लगी, भगवान पर से उसका विश्वास उठ गया। उसको लगा कि इस दुनिया में भगवान है ही नहीं। फिर उसने सोचा कि अब पूरी ज़िंदगी यहीं इस टापू पर ही बितानी है, तो क्यों न एक झोपड़ी बना लूं। फिर उसने डालियों व पत्तों से एक छोटी सी झोपड़ी बना ली। उसने मन ही मन सोचा कि आज से झोपड़ी में सोने को मिलेगा बाहर नहीं सोना पड़ेगा। रात होने ही वाली थी कि अचानक मौसम बदला बिजली कड़कने लगी और अचानक बिजली उस झोपड़ी पर आ गिरी और झोपड़ी जलने लगी। यह देखकर वह आदमी टूट गया और आसमान की ओर देखकर बोला 'तू भगवान नहीं है। तुझमें दया जैसा कुछ नहीं है, तू बहुत क्रूर है।' वह आदमी हताश होकर सिर पर हाथ रखकर रो रहा था कि अचानक एक नाव टापू के पास आई। नाव से उतरकर दो आदमी बाहर आए और बोले कि हम तुम्हें बचाने आये हैं। दूर से इस वीरान टापू पर जलती हुई चीज़ देखकर लगा कि कोई इस टापू पर मुसीबत में है और मदद मांग रहा है। अगर तुम यह झोपड़ी नहीं जलाते तो हमें पता नहीं चलता कि टापू पर कोई है। उस आदमी की आँखों से आँसू गिरने लगे। उसने ईश्वर से माफी मांगी और बोला कि मुझे क्या पता कि आपने मुझे बचाने के लिए मेरी झोपड़ी जलाई थी।

साधु की सीख

किसी गाँव में एक साधु रहा करता था, वो जब भी नाचता था तो बारिश होती थी। अत: गाँव के लोगों को जब भी बारिश की ज़रूरत होती थी, तो वे लोग साधु के पास जाते और उनसे अनुरोध करते कि वो नाचे, और जब वो नाचने लगता तो बारिश ज़रूर होती। कुछ दिनों बाद चार लड़के शहर से गाँव में घूमने आये। जब उन्हें यह बात मालूम हुई कि किसी साधु के नाचने से बारिश होती है तो उन्हें यकीन नहीं हुआ। शहरी पढ़ाई-लिखाई के घमंड में उन्होने गाँव वालों को चुनौती दे दी कि हम भी नाचेंगे तो बारिश होगी और अगर हमारे नाचने से नहीं हुई तो उस साधु के नाचने से भी नहीं होगी। फिर क्या था अगले दिन सुबह-सुबह ही गाँव वाले उन लड़कों को लेकर साधु की कुटिया पर पहुंचे। साधु को सारी बात बताई गयी। फिर लड़कों ने नाचना शुरू किया। आधा घण्टा बीता और पहला लड़का थक कर बैठ गया पर बादल नहीं दिखे, कुछ देर बाद दूसरे लड़के ने भी यही किया और एक घण्टा बीतते-बीतते बाकी दोनों लड़के भी थक कर बैठ गये, पर बारिश नहीं हुई। अब साधु की बारी थी, उसने नाचना शुरु किया, एक घण्टा बीता, बारिश नहीं हुई। साधु नाचता रहा..दो घण्टे बीत गये बारिश नहीं हुई...पर साधु तो रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था, धीरे-धीरे शाम ढ़लने लगी कि तभी बादलों की गड़गड़ाहट सुनाई दी और जोरों की बारिश होने लगी। लड़के दंग रह गये। और तुरंत साधु से क्षमा मांगी और पूछा - ''बाबा भला ऐसा क्यों हुआ कि हमारे नाचने से बारिश नहीं हुई और आपके नाचने से हो गयी?'' साधु ने उत्तर दिया -''जब मैं नाचता हूँ तो दो बातों का ध्यान रखता हूँ, पहली बात मैं ये सोचता हूँ कि अगर मैं नाचूंगा तो बारिश को होना ही पड़ेगा और दूसरी ये कि मैं तब तक नाचूंगा जब तक कि बारिश न हो जाये। सफलता पाने वालों में यही गुण विद्यमान होता है। वो जिस कार्य को करते हैं उसमें उन्हें सफल होने का पूरा यकीन होता है और वे तब तक उस चीज़ को करते हैं जब तक कि उसमें सफल न हो जाएं।

अकल्याण के पीछे एक कल्याण

बुद्ध एक गाँव में उपदेश दे रहे थे, उन्होंने कहा कि ''हर किसी को धरती माता की तरह सहनशील तथा क्षमाशील होना चाहिए। क्रोध ऐसी आग है जिसमें क्रोध करने वाला दूसरों को जलाएगा तथा खुद भी जल जाएगा।'' सभा में सभी शांति से बुद्ध की वाणी सुन रहे थे, लेकिन वहां स्वभाव से अति क्रोधी एक ऐसा व्यक्ति बैठा था जिसे ये सारी बातें बेतुकी लग रहीं थी। वह कुछ देर ये सब सुनता रहा फिर अचानक ही आग-बबूला होकर बोलने लगा, ''तुम पाखंडी हो, बड़ी-बड़ी बातें करना यही तुम्हारा काम है। तुम लोगों को भ्रमित कर रहे हो, तुम्हारी ये बातें आज के समय में कोई मायने नहीं रखतीं।'' ऐसे कई कटु वचनों को सुनकर भी बुद्ध शांत रहे। उसकी बातों से न वह दु:खी हुए, न ही कोई प्रतिक्रिया दी। यह देखकर वह व्यक्ति और भी क्रोधित हो गया और उसने बुद्ध के चेहरे पर थूक दिया और वहाँ से चला गया।

अगले दिन जब उस व्यक्ति का क्रोध शांत हुआ तो अपने बुरे व्यवहार के कारण पछतावे की आग में जलने लगा और वह बुद्ध को ढूंढ़ते हुए उसी स्थान पर पहुंचा। पर बुद्ध कहां मिलते वह तो अपने शिष्यों के साथ पास वाले एक अन्य गाँव निकल चुके थे।

वह व्यक्ति उन्हें ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वहां पहुंचा जहां बुद्ध प्रवचन दे रहे थे। उन्हें देखते ही वह उनके चरणों में गिर पड़ा और बोला, ''मुझे माफ कीजिए प्रभु!'' बुद्ध ने पूछा, कौन हो भाई? क्यों क्षमा मांग रहे हो? उसने कहा, क्या आप भूल गये। मैं वही हूँ जिसने कल आपके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया था। मैं शर्मिंदा हूँ। मैं मेरे दुष्ट आचरण की क्षमायाचना करने आया हूँ। बुद्ध ने प्रेमपूर्वक कहा, बीता हुआ कल तो मैं वहीं छोड़कर आ गया और तुम अभी भी वहीं अटके हुए हो। तुम्हें अपनी गलती का आभास हो गया, तुमने पश्चाताप कर लिया, तुम निर्मल हो चुके हो। अब तुम आज में प्रवेश करो, बुरी बातें एवं बुरी घटनाएं याद करते रहने से वर्तमान तथा भविष्य दोनों बिगड़ते हैं। बीते हुए कल के कारण आज को मत बिगाड़ो। उस व्यक्ति के मन से सारा बोझ उतर गया। उसने बुद्ध के चरणों में पड़कर क्रोध त्याग का तथा क्षमाशीलता का संकल्प लिया। बुद्ध ने उसके सिर पर आशीष का हाथ रखा। उस दिन से उसमें परिवर्तन आ गया और उसके जीवन में सत्य, प्रेम व करुणा की धारा बहने लगी।

झील बन जाओ

एक बार एक नवयुवक किसी जेन मास्टर के पास पहुंचा। ''मास्टर, मैं अपनी ज़िंदगी से बहुत परेशान हूँ, कृपया इस परेशानी से निकलने का उपाय बताएं। '' युवक बोला।

मास्टर बोले, ''पानी के गिलास में एक मुट्ठी नमक डालो और उसे पीयो।'' युवक ने ऐसा ही किया। ''इसका स्वाद कैसा लगा?'' मास्टर ने पूछा। युवक थूकते हुए बोला, बहुत ही खराब..एकदम खारा। मास्टर मुस्कुराते हुए बोले, ''एक बार फिर अपने हाथ में एक मुट्ठी नमक ले लो और मेरे पीछे-पीछे आओ।'' दोनों धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे और थोड़ी दूर जाकर स्वच्छ पानी से बनी एक झील के सामने रुक गये। मास्टर ने कहा, चलो, अब इस नमक को पानी में डाल दो। युवक ने ऐसा ही किया। ''अब इस झील का पानी पीयो,'' मास्टर बोले। युवक पानी पीने लगा। एक बार फिर मास्टर ने पूछा, ''बताओ, इसका स्वाद कैसा है, क्या अभी भी तुम्हें ये खारा लग रहा है?'' युवक बोला, नहीं, ये तो मीठा है, बहुत अच्छा है। मास्टर युवक के बगल में बैठ गए और उसका हाथ थामते हुए बोले, ''जीवन के दु:ख बिल्कुल नमक की तरह हैं, न इससे कम ना इससे ज़्यादा। जीवन में दु:ख की मात्रा वही रहती है, बिल्कुल वही, लेकिन हम कितने दु:ख का स्वाद लेते हैं ये इस पर निर्भर करता है कि हम उसे किस पात्र में डाल रहे हैं। इसलिए जब तुम दु:खी हो तो सिर्फ इतना कर सकते हो कि खुद को बड़ा कर लो...। गिलास मत बने रहो, झील बन जाओ।''

थाईलैंड-बैंकॉक। थाई रेयॉन पब्लिक कंपनी में "होलिस्टिक डेवलपमेंट" विषय पर भाषण देने के पश्चात् ब्र.कु.भारत भूषण, मधुलिका सिपानी, ब्र.कु.दमयन्ती, जी.एम.अल्का भट्टाचार्जी तथा अन्य।

मुंबई-डोंबिवली। 78वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती पर डोंबिवली सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित 'स्वर्णिम युग की चाबी' कार्यक्रम में उपस्थित 150 विशेष श्रोतागणों को आध्यात्मिक रहस्य समझाते हुए ब्र.कु.शकू।

कुन्डली-सोनीपत(हरियाणा)। 'नारी सुरक्षा-हमारी सुरक्षा' अभियान व 78वीं शिवजयंती समारोह के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर अदिति बहन, राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी, कपूर भाई,प्रबन्धक टी.डी.आइ. क्लब, जवाहर भाटिया,निदेशक,प्रभु दयाल पब्लिक स्कूल, ब्र.कु. रानी तथा अन्य।

फर्रुखाबाद-उ.प्र.। शिव संदेश रथ यात्रा का उद्घाटन चारों धर्म गुरुओं के द्वारा करने के बाद सूफी संत पप्पन मियाँ, ब्र.कु.मंजु, ब्र.कु.साधना, ग्रंथी गुरुवचन सिंह ज्ञानी, पादरी किसन मसीह, सनातन धर्म के अरुण प्रकाश तिवारी ददुआ, पूर्व हेल्थ डायरेक्टर रामबाबू तथा अन्य।

ऊँझा-गुज.। नेशनल नेटबॉल स्पर्धा की विजेता टीम को ट्रॉफी देते हुए ब्र.कु. जिज्ञा तथा ब्र.कु. जिनल।

गोरखपुर-उ.प्र.। गोरक्षपीठ के उत्तराधिकारी एवं गोरखपुर सदर सांसद योगी आदित्यनाथ को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.पारुल एवं ब्र.कु.बेला।